वर्ष: 13 | अंक : 12 | दिसंबर 2022 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

भारतीय संस्कृति, धर्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, धर्म व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-13, अंक-12
दिसम्बर, 2022
मार्गशीर्ष–पौष, 2079 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, ए-61, डीडीए शेड, ओखला
इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-।।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-011-26652101/102
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org
Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

सही सोच से ही उद्धार

जो विचार कष्टकारी हो उसे त्याग देना चाहिए। वह जीवन में नकारात्मकता लाता है, जीना दुष्कर कर देता है। अक्सर इस तरह के विचार काल्पनिक ही होते हैं। कल्पनाओं से दुःख पाने की आदत न सिर्फ अपने लिए, बल्कि अपनों के लिए भी दुःख लाती है। इस तरह का व्यक्ति न तो खुद ठीक से जी पाता है, न ही अपने आसपास के लोगों को चैन से जीने देता है। जीवन में सुख-दुःख, अच्छाई-बुराई, आचार-व्यवहार में विचारों का विशेष महत्व है और सफलता लाता है। अच्छा विचार व्यक्ति के मन में उत्साह, उमंग और प्रफुल्लता भरता है। वहीं खराब ख्याल नकारात्मकता, बुराई, असफलता, दुःख और बीमारी की वजह बनता है। कोई पूछ सकता है कि बुरे विचार कल्पना हैं, तो वह भी तो कहीं से उठी होगी? यह संसार, आपके आसपास रहने वाले लोग और रोजाना घटित होने वाली घटनाओं को देखकर ही विचार आते हैं और कल्पना भी। असल में यह संसार ही इंसान का आइना है। सिद्ध पुरुष इस आइने में खुद को देखते हैं, लेकिन मूर्ख कभी खुद को नहीं देखता। वह दूसरों की छवि देखता है। यहीं से उसके दुःख शुरू होते हैं।

हमें समझना होगा कि दुःख हमारे मन में होने वाले चिंतन से उठता है। जीवन में घटने वाली घटनाओं में जब हम अपने विचारों को नत्थी करके उसकी परिभाषा बनाते हैं, उसे सच मानने लगते हैं, तो चिंतन-मनन कई गुना बढ़ जाता है। जीवन की जो भी घटनाएं दुःखद लगती हैं, उन्हें नकारात्मक नजरिये से देखेंगे, तो वे वैसा ही फल देंगी। जब-जब ऐसा जीवन में होगा, दुःख ही मिलेगा। कौटिल्य कहते हैं कि मूर्खता कष्ट है, यौवन भी कष्ट है। उनके अनुसार अगर इंसान चाहे तो आसानी से खुशी पा सकता है। लेकिन जो लोग मूर्ख होते हैं, वे सही और गलत तो दूर, कठिन और आसान का भी फर्क नहीं कर पाते। ऐसे लोगों को हमेशा किसी ना किसी तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। भगवद्गीता के अनुसार आदमी को अपना उद्धार अपनी सोच से ही करना चाहिए। व्यक्ति स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु भी। आत्मा ही आत्मा की मित्र होती है और वही शत्रु भी होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुःख को समान मानकर युद्ध में लग जा। इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा। यानी विचार अगर बाहरी चीजों से प्रभावित नहीं होते, तभी कर्मों से पुण्य मिल सकता है, अन्यथा दुःख तो इंतजार में बैठा ही है। ■

मानव कल्याण के लिए ही प्रकट हुए थे ईसा मसीह

संत-महापुरुषों का काम अध्यात्म ज्ञान के द्वारा लोगों के लिए सत्य, अहिंसा, प्रेम, मर्यादा, शांति और सामाजिक सद्भाव का मार्ग प्रशस्त करना होता है। उनका हर कार्य मानव समाज के लिए दिव्यता से परिपूर्ण एवं कल्याणकारी होता है। अपने महान व्यक्तित्व तथा सत्कर्मों के द्वारा वे जीते जी तो लोगों के दिलों पर राज करते ही हैं, शरीर का त्याग करके जाने के बाद भी दुनिया भर में उनकी पूजा की जाती है। हमारे देश में ऐसे असंख्य लोग हैं जो इस बात में विश्वास करते हैं कि धर्म की स्थापना, सज्जनों की रक्षा तथा दुष्टों के संहार के लिए समय-समय पर मानव शरीर में ईश्वर का अवतार होता है। वह महापुरुष संसार में अपना कार्य संपन्न करने के बाद अपने लोक में वापस चला जाता है।

ऐसे नित्य अवतारों की श्रेणी में अनेक सिद्ध-महापुरुषों का नाम आता है। श्रीमद्भगवत गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी है कि इस संसार में जिसके अंदर भी सामान्य से अधिक कोई गुण परिलक्षित होता है, वह परमात्मा का ही कोई विशिष्ट अंश होता है।

ईसामसीह को परमेश्वर का इकलौता पुत्र कहा गया है, जिन्हें मानव कल्याण के लिए धरती पर परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। उन्होंने सभी लोगों को ईश्वरीय शक्ति को जानने तथा शांति प्राप्त करने का संदेश दिया। गरीब तथा जरूरतमंद लोगों की सेवा को वे सबसे बड़ा पुरुषार्थ और पुण्य समझते थे। जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने लोगों को परमेश्वर का शुभ संदेश सुनाया और दीन-दु:खियों की सेवा को ही आत्म-कल्याण का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया।

ईसा मसीह के अन्दर लोगों के प्रति दया, करुणा तथा सेवा का भाव कूट-कूट कर भरा था। जब ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया जा रहा था तो सूली पर चढ़ाने वालों के प्रति भी उनके अंदर कोई गुस्सा एवं दुर्भाव नहीं था। ईसा मसीह ने उनके अपराधों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगी थी। मनुष्य को जगत की ज्योति बताने वाले ईसा मसीह ने इस बात की भी घोषणा की थी कि प्रकाश के उस दीपक को दीवार पर यानी ऊँचाई पर रखा जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोगों को उस प्रकाश का लाभ मिल सके। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य का दिल संकुचित नहीं बल्कि विशाल होना चाहिए।

हर वर्ष 25 दिसम्बर को बड़ा दिन (क्रिसमस डे) मनाया जाता है। सच कहा जाए तो परमेश्वर के पुत्र कहे जाने वाले

ईसामसीह का जन्म सर्दियों में येरूसेलम के एक अस्तबल में कई प्रकार की प्रतिकूलताओं के बीच हुआ। उसकी सूचना सर्वप्रथम गडरियों को प्राप्त हुई और लोगों ने आकाश में एक दिव्य प्रकाश के रूप में एक अलौकिक प्रतिबिम्ब को देखा जो इस बात की ओर इशारा कर रहा था कि अब जीवन में दु:खों का अंत होने वाला है, अभावों को समाप्त करने वाला मसीहा इस दुनिया में आ गया है। वह अपने ज्ञान के प्रकाश से हर अज्ञानता का अंधियारा दूर करेगा। जो लोग उसके दिव्य उपदेशों/ज्ञान पर ध्यान देंगे और व्यावहारिक रूप से उस पर अमल करेंगे, निश्चित रूप से उनका परमेश्वर के प्रति विश्वास दृढ़ होगा।

ईसामसीह ने आजीवन लोगों को अपना दिल एवं विचारों को बड़ा करने का संदेश दिया जिससे दीन-दु:खियों व वंचितों के प्रति सहायता का भाव पनपता रहे। ईश्वर की साधना करने के साथ-साथ जरूरतमंदों की सेवा मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। आइए, ईसामसीह के जन्म दिन पर हम उनके उपदेशों को जीवन में उतारें और दूसरों की मदद करते हुए आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। पूरे विश्व के अंदर सुख-शांति और समृद्धि की कामना करते हुए हम उनका जन्म दिन इस प्रकार मनाएं कि यह दिन सही अर्थों में हमारे जीवन का बड़ा दिन बन जाए। ■

भगवान के सच्चे नाम को जानकर करें सुमिरण

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद् गीता में अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि शरीर को छोड़ते समय जो मेरे नाम का सुमिरण करता है, वह मेरे को निःसन्देह प्राप्त होता है। विचार करने की बात है कि जब भगवान के नाम को जाना ही नहीं तो आखिर समय में वह सुमिरण कैसे होगा? यदि उस नाम को नहीं जाना तो तुम्हारा वेद-शास्त्र और बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ना, पूजा-पाठ-हवन इत्यादि करना सब बेकार चला गया, क्योंकि आखिरी समय में तुमसे इन मन्त्रों का उच्चारण नहीं हो सकेगा। उस समय न तुम माला फेर सकोगे, न मन्दिर-मस्जिद जा सकोगे और न मन्त्रों का उच्चारण कर सकोगे। तुम कहते हो कि आखिरी समय में भगवान के नाम को जान लेंगे, अभी तो खूब खाओ, पिओ और मौज उड़ाओ। तो उसके लिए भगवान श्रीकृष्ण फिर समझाते हैं कि जीवन काल में जिस मनुष्य अथवा वस्तु की याद सबसे ज्यादा आती है, मरण काल में भी उसी की याद आती है। इसलिए हे अर्जुन! तू सब काल में निरन्तर मेरा सुमिरण भी कर और युद्ध भी कर। उस समय जिस बहाने भी, जहां भी तेरा शरीर छूटेगा, तू मेरे को ही मिलेगा।

अगर परमात्मा को मिलना है तो निरन्तर बिना किसी अन्तर के उसका सुमिरण करना चाहिए और वह सुमिरण कैसे किया जाता है, उस विधि को संत-महापुरुषों से पूछना चाहिए, उसे जानना चाहिए। जिस नाम को जानने

के लिए मैं कहता हूं, वही आदि नाम है और वही सच्चा नाम है। यदि उसको तुम जानकर सुमिरण करोगे, तो तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी।

वह कौन-सा नाम है? गीता तुम पढ़ते हो, लेकिन भगवान का नाम पढ़ने-लिखने में आने वाला नहीं है, वह भाषा का विषय नहीं है। अगर वह नाम पढ़ने-लिखने का विषय होता तो पढ़े-लिखे तो मुक्त हो जाते और अनपढ़ कभी मुक्त नहीं हो पाते। भिलनी कभी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर पाती। और भी कई ऐसे भक्त हुए हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।
बिनु सत्संग न पावइ प्रानी।।

मैंने एक विद्वान महाशय से पूछा कि भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! मैं तुझे एक ऐसी बात बताऊँगा जो बहुत ही गुप्त है और जिसे जान लेने मात्र से तू अशुभ से छूट जायेगा। तो वह क्या चीज है, जो भगवान ने अर्जुन को बतलायी? इस पर वे महाशय बोले कि वह ब्रह्मज्ञान की बात है। जब तुम्हें ब्रह्मज्ञान हो जायेगा तो मुक्त हो जाओगे। तो मैंने उनसे कहा कि इसमें आगे लिखा है-

राजाविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्त्तुमव्ययम्।।

वह राजविद्या है, सब विद्याओं का राजा है, राजगुह्यं, सब गोपनीयों (गुप्त) चीजों का भी राजा है, उससे ज्यादा गुप्त और कोई चीज नहीं है, पवित्र है, उत्तम है, अविनाशी है, उसका कभी नाश नहीं होता। तो कहने लगे कि यह ब्रह्मज्ञान ही है, यही ब्रह्मज्ञान सब विद्याओं का राजा है और सब गोपनीयों का राजा है। यही सबसे पवित्र है और सबसे उत्तम है। मैंने कहा ठीक है, लेकिन आगे कहा है कि साधन करने में अत्यन्त सुगम और प्रत्यक्ष फल देने वाला है। ब्रह्मज्ञान तो साध्य है, साधन नहीं, जब ब्रह्मज्ञान हो ही गया तो फिर काहे का साधन? लेकिन भगवान साधन बताते हैं तो वह कौन-सा साधन है, बताओ? तब कहने लगे

कि यह भक्ति है। तो मैंने उनसे कहा कि अभी तो ब्रह्मज्ञान कह रहे थे, अब भक्ति क्यों कहने लगे? फिर मैंने उनको बतलाया कि भगवान कहते हैं कि वेद पढ़ने से, तप करने से, दान-पुण्य करने से और यज्ञादि करने से मेरा ज्ञान नहीं होता। मेरा ज्ञान अनन्य भक्ति से होता है, जैसा कि गीता में बताया है, तो कहने लगे कि यह तो भक्ति की महिमा भगवान ने गाई है। मैंने कहा- क्यों गायी है? इसलिये न कि दुनियां भक्ति में लगेगी तो मैं मिल जाऊँगा। इसीलिये तो भगवान कहते हैं कि मेरा तत्वज्ञान तो भक्ति से प्राप्त होता है और फिर गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने बताया है कि इस तत्वज्ञान रूपी धर्म में जिसकी श्रद्धा नहीं है, वह मेरे को कभी नहीं मिल सकता। वह सदा चौरासी में भ्रमण करता रहेगा। आज अगर मान लो कोई भीख मांगने वाला है, वह सपने में चक्रवर्ती राजा बन जाए तो आंख खुलने पर फिर वही भिखारी ही रहेगा या कोई चक्रवर्ती राजा सपने में भिखारी हो गया तो आंख खुलने पर चक्रवर्ती राजा ही तो रहेगा? इसी तरह से आजकल के ये जो ब्रह्मज्ञानी हैं, वे भगवान को भूले हुए हैं, उनके लिए यह स्वप्न है। जब उनकी मौत होगी तो फिर पहले की तरह वैसे ही चौरासी में चक्कर लगाते रहेंगे। कभी गधा बनेंगे, कभी कुत्ता बनेंगे और कभी घोड़ा बनेंगे, क्योंकि फिर इन्हें कोई भी चौरासी से नहीं छुड़ा सकता, केवल एक प्रभु की भक्ति है, जो इन्हें चौरासी से छुड़ा सकती है। तो ऐसी है प्रभु की भक्ति, जिसकी महिमा स्वयं भगवान ने गायी। भक्ति जो है, वह स्वतन्त्र है। वेद पढ़ने की, यज्ञ करने की या दान-पुण्य आदि करने की, कोई विद्या पढ़ने की जरूरत नहीं है। भक्ति हर एक आदमी कर सकता है, प्रभु के नाम का सुमिरण कर सकता है। कहा है-

लेने को हरि नाम है,
देने को अन्नदान।
तरने को आधीनता,
डूबन को अभिमान।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभिमान को छोड़ो। तुमको अभिमान है कि हम तो बहुत बड़े मिनिस्टर हैं, या प्रेसीडेंट हैं या बड़े भारी सेठ हैं, हमारी इतनी मिलें चलती हैं, हम इतने बड़े राजा हैं, यह सब झूठा मान-गुमान है। एक ही इलेक्शन में यदि हार जायें तो मिनिस्ट्री रखी रह जाती है। जीते-जी मिनिस्टर बनने से रह जाते हैं और मरने के बाद तो भाई, कोई भी मिनिस्टर नहीं रहेगा। तो जीते जी उलझनों में उलझे हुये हो। ज्ञान के बारे में किसी से पूछने में शर्म आती है। पर मैं पूछता हूँ, जब किसी अनजान जगह में तुम पहुँच जाते हो, जहां चार-पांच रास्ते होते हैं, वहां अगर कोई झाड़ू लगा रहा होता है तो उससे भी पूछ लेते हो कि तुम्हें किधर जाना है? लेकिन भगवान की भक्ति का रास्ता तुम नहीं पूछोगे। भक्ति के लिए तुम्हें फुर्सत नहीं है। जो सत्य था, वह फुर्र हो गया, उड़ गया। अब तो झूठ ही झूठ फैला हुआ है। रिश्वतखोरी का जमाना है। बिना वजह किसी पर मुकदमा कर देने का जमाना है। बड़े-बड़े होटलों में, सिनेमाघरों में लाइनें लगी हैं, क्योंकि सब कुछ यहीं दिखाई देता है। इसके अलावा दुनिया में कुछ नजर ही नहीं आता। माया की चमक-दमक में मनुष्य अपने लक्ष्य को भूलता जा रहा है। सुदामा जिस महल को देखकर रोये थे कि यह माया है, यह मैंने कब मांगी थी भगवान से। यह तो बड़ी ठगनी है, यह सबको खा जाती है, इसको कोई नहीं भोग पाता। तब सुदामा की पत्नी ने कहा कि मेरी इच्छा थी, मैं गरीबी से बहुत दुःखी थी। इसलिए भगवान ने अन्दर की आवाज सुनकर ये धन-दौलत और महल-खजाने मुझे दिये हैं। इसी माया-मोह के जाल में सारी दुनियां फँसी पड़ी है। संसार की चीजें नाश हो जायेंगी, कुटुम्ब–कबीला छूट जायगा, केवल एक प्रभु का नाम ही सच्चा साथी है। मगर उसे तुम पूछते नहीं। बाकी, यह सब स्वप्नवत् है भाई। एक सज्जन मेरे पास आये कहने लगे- थोड़े दिन हुए मेरी स्त्री मर गई, मुझे उसकी याद बहुत आयी है। मैं तुम्हें एक सच्ची बात बताता हूं। रात मुझे स्वप्न हुआ और सवेरे के टाइम हुआ। बहुत अच्छा स्वप्न था कि कहीं सत्संग हो रहा है, लोग मेरे से कह रहे हैं कि वहां चलो, मैंने उनसे कहा कि मेरे पास टाइम नहीं है, स्वप्न तो बड़ा अच्छा था, लेकिन था तो स्वप्न ही न? तो ऐसे ही यह जीवन भी एक स्वप्न है।

अगर परमात्मा को मिलना है तो निरन्तर बिना किसी अन्तर के उसका सुमिरण करना चाहिए और वह सुमिरण कैसे किया जाता है, उस विधि को संत-महापुरुषों से पूछना चाहिए, उसे जानना चाहिए। जिस नाम को जानने के लिए मैं कहता हूं, वही आदि नाम है और वही सच्चा नाम है। यदि उसको तुम जानकर सुमिरण करोगे तो तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी।

सब स्वप्न है भाई। मैंने उनको समझाया। एक और सज्जन रात को मेरे पास आये। कहने लगे कि मेरा मन नहीं रुकता। तो मैंने कहा कि भगवान का नाम तुम्हारे पास है, उसका सुमिरण और अभ्यास तुमको करना है।

जब भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन से कहते हैं जिसको कि इतना विराट रूप दिखलाया और यह भी कहा कि मैंने ही सब कुछ बनाया, मैं ही सबमें हूँ और सब मेरे में है, वह भी कहते हैं अर्जुन से कि अभ्यास करो, तो अगर हम तुमको कहते हैं कि अभ्यास करो तो हम कौन सी गलत बात कहते हैं। अर्जुन ने भगवान से कहा कि भगवान, जैसे आकाश के टुकड़े करना और हवा की गठरी बाँधना दुष्कर है, वैसे ही मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है। तब भगवान ने कहा कि बेशक, जो तुम कहते हो ठीक है, मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है पर अभ्यास और वैराग्य से मन काबू में होता है। तो अभ्यास करो, चलते-फिरते, सोते-जागते, उठते-बैठते अभ्यास करो। कहा है-

अगर है शौक मिलने का,
तो हर दम लौ लगाता जा।

दिल में झाड़ू लगाओ। अगर कहीं मैल जमा हुआ है तुम्हारे अन्दर, तो निकालो उस मैल को। अगर ऐसा नहीं करोगे तो एक तो कचरा पहले का ही है उस पर और भी कचरा डालते रहोगे तो क्या होगा? कचरा खाना बन जायेगा, वह सड़ेगा, बदबू आने लगेगी। जहां सफाई होती रहती है, वहां बदबू नहीं आती ।

तो प्रेमी सज्जनो! मेरे कहने का मतलब यह है कि उस सच्चे नाम को जानो और प्रभु की सच्ची भक्ति में लगो। एक आदमी कहने लगा कि हमारे ऊपर दया करो। मैंने कहा कि मेरे हृदय में और सन्तों के हृदय में तो सदैव दया ही रहती है, दया के सागर संत होते हैं। उनको किसी से क्या द्वेष क्या मतलब? कोई उपदेश लेवे, नाम लेवे तो भी अच्छा है, न लेवे तो भी अच्छा है।

कबिरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती न काहू से बैर।

हम तो सबकी खैर मनाते हैं। जो उपदेश नहीं लेता है, ना ले। नाम को नहीं जपता है, तो ना जपे। मुझसे लोग कहते हैं कि आप ऐसे ही ज्ञान दे देते हो और महात्माओं से भी दिला देते हो, लोग उसकी कदर नहीं करते हैं। मैंने कहा कि यदि वह ज्ञान की कदर नहीं करेगा, तो लाभ उसको नहीं होगा। मान लो एक आदमी को हीरा मिला, उसने उसे पत्थर समझ लिया तो उसको क्या कीमत मिलेगी? एक कुम्हार था। मिट्टी गधे पर लादकर ला रहा था। उसे एक लाल मिल गया। उसने ऐसी ही कोई मामूली चीज समझकर गधे के गले में लटका दिया। एक जौहरी आया, उसने देखा इतना बेशकीमती लाल गधे के गले में लटक रहा है। उसने कुम्हार से कहा कि इसे बेच दो। शाम का वक्त था, घर जाने का समय हो रहा था। कुम्हार ने सोचा, चलो दो चार आने मिल जायेंगे, पूछा क्या दोगे? जौहरी ने कहा–दस लाख रुपये।

कुम्हार ने सोचा यह हंसी कर रहा है या फिर यह कोई बढ़िया चीज है। चलो एक दफे ऐसे ही कह देता हूँ कि नहीं दूँगा। उसने कहा नहीं दूँगा। तब जौहरी ने कहा दस करोड़। यह सुनकर कुम्हार ने सोचा अजीब बात है, इतना बढ़ गया फिर कह दिया, नहीं दूँगा। इसी तरह जौहरी उस हीरे की कीमत अरबों रुपये लगाता गया। आखिर में जौहरी ने जितने जवाहरात और धन उसके पास था सब उसकी कीमत में लगा दिया।

कुम्हार ने सोचा चलो अब बहुत देर हो रही है, दे दो। जौहरी ने जितने जवाहरात उसके पास थे, सब उसको दे दिये और कुम्हार ने जैसे ही गधे के गले से लाल को खोलकर जौहरी के हाथ पर रखा, वह लाल फूट गया, उसके टुकड़े बिखर गये। उसमें से आवाज आई कि इस कुम्हार को तो पता नहीं था, लेकिन तुम्हें तो पता था कि मेरी कीमत नहीं आंकी जा सकती, फिर भी तुमने मेरी कीमत लगायी, इसलिए मैं फूट गया। कहा है–

हीरा को तो जौहरी शब्दी परखे साध।
कबीर परखे साध को ताका मता अगाध।।

हीरा को तो जौहरी परखता है और शब्द को साधु परखता है कि इस शब्द का क्या मतलब है और जो साधु को परखने वाला होता है उसकी मति का तो ठिकाना नहीं है।

अर्जुन ने भगवान से कहा कि भगवान, जैसे आकाश के टुकड़े करना और हवा की गठरी बाँधना दुष्कर है, वैसे ही मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है। तब भगवान ने कहा कि बेशक, जो तुम कहते हो ठीक है, मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है पर अभ्यास और वैराग्य से मन काबू में होता है।

मनुष्य की आत्मिक चेतना को जागृत करता है सत्संग

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान को प्राप्त करने के लिए आज सभी लोग हाथ की माला को फेरने में लगे हैं, लेकिन ऐसा करने से भगवान की प्राप्ति नहीं होगी। संत कबीर दास जी कहते हैं-

माला फेरत जुग गया,
पाया न मन का फेर।
कर का मणका डार दे,
मन का मणका फेर।।

हाथ की माला को फेरते-फेरते युग बीत गया, लेकिन मन का पार नहीं पा सके, भगवान को प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए हाथ की माला को छोड़कर मन की माला को फेरना है। उन्होंने आगे फिर कहा-

तंत्र मंत्र सब झूठ हैं,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार।।

जितने भी बाहरी तंत्र-मंत्र हैं, वे सब झूठे और भ्रमित करने वाले हैं। मनुष्य को कभी भी तंत्र-मंत्र के भ्रमजाल में नहीं फंसना चाहिए, बल्कि जो सार शब्द है, संत-महापुरुषों से उसको जानना चाहिए। सार शब्द को जाने बिना कोई भी मनुष्य मायारूपी भवसागर से पार नहीं हो सकता, उसको मोक्ष नहीं मिल सकता है। संत कहते हैं कि भगवान की असीम कृपा से यह मनुष्य शरीर मिला है, यह तन बार-बार नहीं मिलता है। इसलिए मनुष्य तन की कदर करो। जब बच्चा मां के गर्भ में होता है तो भगवान से वायदा करता है, प्रार्थना करता है कि मुझे इस कष्ट से बाहर निकालो, बाहर जाकर मैं तुम्हारा भजन करूंगा। लेकिन जैसे ही वह संसार में आता है, बड़ा होता है तो मोह-माया के नशे में पड़कर प्रभु से किये वायदे को भूल जाता है। हमारी उम्र कब बीत जाये, कब मौत हो जाये, इसका कुछ नहीं पता। जीवन की डोर हमारे हाथ में नहीं है, यह तो विधाता के हाथ में है। इसलिए हमें जो देवदुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है, इसमें हमें भगवान के नाम को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए। बहुत से लोग कहते हैं कि अभी क्या जरूरी है, भजन तो बुढ़ापे में कर लेंगे। लेकिन यह कोई जरूरी नहीं हैं कि बुढ़ापे में ही मौत आये, मौत कभी भी, कहीं भी आ सकती है।

एक सेठ जी एक बार सत्संग में गये। वहां उनको एक ही बात समझ में आई कि आइये, बैठिये और जाइये। घर आकर जब सो गये तो स्वप्न में उनको सत्संग का ख्याल आया। उधर चोर उनके घर में चोरी करने आया। सेठ सोते-सोते बोले कि आइये। चोर सोचने लगा कि कहीं सेठ जी जगे तो नहीं हैं। चोर तब तक अंदर आ गया। फिर वह सेठ बोले, बैठिये। उस चोर को शंका हो गयी कि शायद, सेठ जी ने उसे देख लिया है। वह सेठ जी के पैर पकड़कर कहने लगा, मुझे क्षमा करें। जब सेठ जी की आंख खुली तो बोले यह क्या? वह बोला सेठ जी, मैं चोर हूं। मैं यहां पर चोरी करने आया था। आपने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया।

सेठ जी ने सोचा, देखो मैंने सत्संग में तीन ही बातें सुनी थीं कि आइये, बैठिये और जाइये। इन्हीं बातों के कारण मेरा धन बच गया। इसी प्रकार यदि मैं सत्संग में अधिक समय तक जाता रहता, तो मुझे बहुत लाभ होता। मेरा यह जन्म और अगला जन्म भी सुधर जाता, सफल हो जाता। इस सपने का सेठ जी पर बहुत असर पड़ा और फिर सेठ जी ने आत्मज्ञान को जाना।

इस प्रकार जो सच्चे संत-महापुरुष होते हैं, वे सत्संग एवं अध्यात्म ज्ञान के द्वारा मनुष्य की आत्मिक चेतना को जगाने का प्रयास करते हैं। हमें उनसे आत्मज्ञान को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए।

लख चौरासी से मुक्ति पाना ही वास्तविक स्वतंत्रता

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! 15 अगस्त हमारे भारतवर्ष की स्वतंत्रता का दिवस है। सन् 1947 में इसी दिन हम लोग अंग्रेजों की गुलामी के चंगुल से मुक्त हुए थे। यह दिन हमारे देश के लिए बड़े महत्व का है। आजादी की खुशी में जगह- जगह जुलूस निकाले जाते हैं, सभाएं होती हैं और "भारत माता" की जय-जयकार होती है। हम सबको बड़ा गर्व है और होना भी चाहिए कि हमने अपने भारत देश को स्वंतत्र करा लिया, पर सन्त-महात्माओं की वाणी है कि जब तक महापुरुषों की शरण में यह जीव नहीं जाता है, तब तक वह पूरी तरह स्वतन्त्रता को प्राप्त नहीं कर पाता है। यह जीव तो अज्ञानता के बंधनों में बंधा हुआ है और स्वतन्त्र तभी हो सकता है, जब समय के महापुरुष की शरण में जाकर उनसे भगवान के ज्ञान को हासिल करेगा, उस सच्चे साधन को प्राप्त करेगा। तो तुम भी जब उस साधन का अभ्यास करोगे, सुमिरण करोगे, तभी बन्धन-मुक्त हो सकते हो। देखो, यह हमारा भारत देश बड़ा महान रहा है। हम लोग ऋषियों की संतान कहलाते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों का सारे विश्व के लिए क्या संदेश था? उनका कहना था कि जिसने आत्मा को जानकर मन-बुद्धि पर विजय प्राप्त कर ली और अपनी इंन्द्रियों को भी वश में कर लिया, वही स्वाधीन है तथा वह दूसरों को भी स्वाधीन कर सकता है। वह सच्चे सुख और शान्ति का अधिकारी हो सकता है। यदि हम लख चौरासी के बन्धन में पड़े रहे तो फिर अपने आपको

कैसे स्वतंत्र कह सकते हैं? आज भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि सारे संसार में बड़ी परेशानी है, बड़ी अशान्ति फैली हुई है। इसका कारण यह है कि हमारे महापुरुषों का जो उद्देश्य था, उनकी जो शिक्षा थी, आज हम उसको भूल गये। हम आ रहे थे, रेलवे स्टेशन पर किसी ने कहा कि "जगदम्बा माता की जय।" एक बार पहले भी जब जगदम्बा मां का अवतरण हुआ था, उस समय देवताओं ने प्रार्थना की कि हे माँ? बड़ा अत्याचार फैल गया है, निशाचरों ने बड़ा भयानक रूप धारण कर लिया है, आप हमारे दुखों को हरो। तो उन्होंने अपना रूप प्रकट कर दिया और दैत्यों का संहार करके देवताओं को भय से मुक्ति दी। तो ऐसी बात नहीं है, जगदम्बा माँ समय-समय पर मनुष्य रूप धारण करके देवताओं की रक्षा तथा दानवों का विनाश करती है। जिस समय पार्वती ने भगवान शिव से विवाह करने के लिए तपस्या की थी तो सप्त ऋषियों ने आकर कहा कि क्यों तुमने उस फकीर से विवाह करने की ठानी है। तुम भगवान विष्णु को अपनाओ। शंकर तो विरक्त रहते हैं, भस्म लगाए रहते हैं, तुम्हारा कोमल शरीर है। तुम सुन्दर हो और वह श्मशान भूमि में बैठे रहते हैं।" पर पार्वती ने कहा कि वह चाहे कैसे भी हैं, मैंने उनको अपने हृदय में जगह दे दी है, उनको अपना लिया है। अब चाहे यह शरीर टुकड़े-टुकड़े भी हो जाये, चाहे कितना भी संकट आ जाये, मैं शिवजी के अतिरिक्त किसी दूसरे को पति नहीं बनाऊँगी। पार्वती के निर्णय पर ऋषियों को बहुत आश्चर्य हुआ। जब निशाचरों ने देवताओं पर अत्याचार किया था तो मां जगदम्बा ने अपने पुत्रों द्वारा उनका वध कर दिया और देवताओं को सच्ची स्वतन्त्रता प्रदान की। तुम भी वास्तव में यदि मां जगदम्बा की शक्ति को समझ जाओगे तो कभी दुःख नहीं पाओगे।

मुझे बड़ी खुशी है कि तुम लोगों ने यह सत्संग का प्रोग्राम किया है। अगर अच्छा प्रोग्राम करोगे, तो दुखी जीव आयेंगे और प्रोग्राम से सुखी होकर जायेंगे। संतों ने कहा है-

गुरु के सुमिरण मात्र से,
नाशत बिघ्न अनन्त।

तुम लोग सच्चे हृदय से सुमिरण नहीं करते हो। यदि गुरु महाराज द्वारा बताये भगवान के नाम का सच्चे हृदय से सुमिरण करोगे, तो सभी कष्टों का अंत हो जायेगा। सत्संग का महत्व संत-महात्माओं ने बहुत ऊंचा बतलाया है। लख–चौरासी का चक्कर काटने के बाद बड़े भाग्य से हमें ऐसा सुन्दर मनुष्य शरीर मिला है। जब सत्संग रूपी गंगा में डुबकी लगाओगे तो फिर दोबारा जन्म नहीं होगा और जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाओगे। सत्संग रूपी गंगा में जब स्नान करोगे, ज्ञान का साबुन लगाओगे, तब जीवन-मुक्त हो जाओगे। इसलिए यदि सचमुच ही भक्ति और सच्ची स्वतंत्रता चाहते हो तो संतों की वाणियों को सुनो। संतों ने जो कहा है, उस पर अमल करो और ग्रहण करो। उसी से तुम्हारा कल्याण हो सकता है। इस संसार में कोई सुखी नहीं है। न कोई घर से सुखी है, न स्त्री से सुखी है, न पुत्र से सुखी है। ऐसा कोई नहीं है, जिसको सारे सुख प्राप्त हों। यह मन तो हर चीज की इच्छा करता है। केवल गुरु महाराज जी के चरण ही ऐसे हैं, जिनका ध्यान करने से सभी इच्छाएं खत्म हो जाती हैं। उन्हीं के चरणों में ऐसी तासीर है। वैसे संसार का सारा वैभव और ऐश्वर्य भगवान ने तुम्हारे हाथ में दिया है, पर एक चीज अपने हाथ में रखी है और जब तक वह चीज तुम्हारे पास नहीं होगी, तब तक तुम दुखी रहोगे, सुखी नहीं हो सकते। वह चीज सन्त-महात्माओं के पास से ही प्राप्त हो सकती है और कहीं से नहीं।

हम लोग चार धाम की तीर्थयात्रा करते हैं। घर में आकर भंडारा करते हैं, मन में संतोष करते हैं कि हम तो चार धाम की यात्रा करके आ गए। पर देखो, मन तो अशांत रहता है। मन शांत हो ही नहीं सकता है। मन का लक्ष्य क्या है? आप बताइए। आप सोए रहते हो और मन उस अवस्था में भी कर्म करता रहता है, वहां से भी वह भागता रहता है। फिर जिन साधनों को तुम करते हो उन साधनों से यह मन कैसे रुक सकता है? बहुत से लोग माला फेरते हैं, परंतु उनका मन कहीं और ही भागता रहता है। हम हिन्दू-धर्म या सिख-धर्म या जैन-धर्म के अंदर (अपने-अपने धर्म के अनुसार हर व्यक्ति) साधन करते हैं। अभी एक छोटा-सा नेपाली बालक मेरे पास आया था। वह इशारा तो उसको भी मालूम है-ध्यान की बात करने का, अंदर में रखने का, पर उस तत्व को वह समझता नहीं है। इसलिए हमारा मन भटक जाता है।

> देखो, यह हमारा भारत देश बड़ा महान रहा है। हम लोग ऋषियों की संतान कहलाते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों का सारे विश्व के लिए क्या संदेश था? उनका कहना था कि जिसने आत्मा को जानकर मन-बुद्धि पर विजय प्राप्त कर ली और अपनी इंन्द्रियों को भी वश में कर लिया, वही स्वाधीन है तथा वह दूसरों को भी स्वाधीन कर सकता है।

अपने परिवार में रहते हुए जब परिवार का कोई सदस्य हमसे बिछुड़ जाता है तो बार-बार हमको वही चीज याद आती है कि वे हमारे थे और अब न जाने कहां चले गये? जरा भी हृदय के अंदर वैराग्य नहीं। अगर वह हमारा होता तो वह हमारे पास रहता। जिसकी वस्तु है, वह ले गया। वह जब चाहे तभी उठाकर ले जाता है। आप देखिए कि जब किसी को आप कर्जा देते हो, किसी की मदद करते हो तो जब चाहे तब आप उसके द्वार पर खड़े हो सकते हो कि ला भाई, मेरी अमानत। यही बात भगवान की भी है। यह जो हमारा शरीर है, यह उसकी अमानत है, वह जब चाहे तभी ले सकता है। इसलिए जो संत लोग होते हैं, ज्ञानी लोग होते हैं- वे ध्यान का महत्व बताते हैं। वे कहते हैं कि परमात्मा के नाम में ध्यान लगाने से ही मन शांत होता है और बाकी किसी प्रकार से यह मन शांत नहीं हो सकता है। इसलिए समय के तत्वदर्शी की, सद्गुरु की आवश्यकता होती है, क्योंकि वही हमको ज्ञान करा सकता है।

देखो, दुनिया में कई धर्म के लोग हैं, परंतु सभी के खाने का रास्ता एक ही है। सभी मुँह से ही खाते हैं। देखने के लिए सबकी आँखें आगे ही हैं, पीछे किसी की नहीं। सुनने के लिए सभी के कान एक ही जगह पर बने हुए हैं और सबके दो ही कान होते हैं, चाहे वह किसी भी मजहब, जाति और देश का हो। सबके पास बोलने के लिए जबान है, चलने के लिए पैर हैं। धर्म कभी भी आपस में लड़ना नहीं सिखाता है।

सद्गुरु के बिना अध्यात्म ज्ञान को पाना असंभव

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनो! व्यास पूजा का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। यहां पर जो माता-बहनें खड़ी हैं, जहां भी उन्हें जगह मिलती है, वहीं बैठ जाएं। ऐसा काम करें, जिससे दूसरे भगवद्भक्तों को सत्संग श्रवण करने में असुविधा न हो। यह आश्रम ऐसी पावन स्थली है, जहां मन को एकाग्र करके जो सत्संग सुनता है, उसकी सचमुच में ही आत्मा की उन्नति होती है। महापुरुष की महानता उनके विलक्षण कार्यों से देखी जाती है। गुरु पूजा का पर्व भक्तों को जीवन में गुरु महाराज जी की जरूरत को दर्शाता है, उनकी याद दिलाता है।

अनादिकाल से गुरु और शिष्य की परम्परा चली आ रही है। सब वेद-शास्त्रों में गुरु महाराज जी की महिमा बताई है। एक भक्त अगर सच्ची निष्काम भक्ति चाहता है और वह चाहता है कि मैं माया के बन्धनों से छूट जाऊं तो उसे सद्गुरु की शरण में जाना पड़ेगा। भक्त सहजोबाई कहती है-भगवान ने तो हमें जन्म दिया, पर गुरु महाराज जी ने माया-मोह के बन्धन से छुड़ाया। सचमुच में जो भक्त गुरु महाराज जी की भक्ति करेगा, वह काम-क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार इन पांचों चोरों से अपने आपको बचा सकता है। गुरु महाराज ऐसा मार्ग बताते हैं, जिस पर चलने से भक्त अनीति से बच जाता है, माया की तरफ मुड़ने से बच जाता है और धर्म का मार्ग अपना लेता है। महापुरुष का जन्म संसार के कल्याण के लिये होता है। भगवान श्री राम जब धरती पर आये तो गुरु की मर्यादा रखने के लिये वे गुरु वशिष्ठ महाराज जी की शरण में गए। वहां उन्होंने उनसे ज्ञान की दीक्षा ली। भगवान श्रीकृष्ण जो स्वयं त्रिलोकी के नाथ हैं, जो भगवान के अवतार हैं, उनको भी गुरु की शरण में जाना पड़ा। उन्होंने भी गुरु महाराज जी से आत्मज्ञान की शिक्षा लेकर समाज में मर्यादा स्थापित की। आज कलिकाल में ऐसे ही आध्यात्मिक गुरु की जरूरत है, जो समाज के अंदर व्याप्त अज्ञानता के अन्धकार को दूर कर सके। आज समाज में घोर कलिकाल व्याप्त है। हर मनुष्य के अन्दर अज्ञान रूपी अन्धकार छाया हुआ है और वह अपने अस्तित्व को भूल चुका है। वह भूल चुका है कि मैं किसलिए इस संसार में आया हूं, किस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मेरा जन्म हुआ? प्रभु को भूलकर उसने खराब रास्ते अपना रखे हैं।

सारी रामायण का सार दो ही बातों में आ जाता है। मरते समय रावण लक्ष्मण से कहता है कि हे लक्ष्मण! अच्छे काम को कल पर नहीं छोड़ना। वह कहता है कि मैंने दो ही बातें जीवन में सोची थीं कि एक तो मैं स्वर्ग तक सीढ़ी बनवाऊंगा और दूसरा खारे समुद्र के जल को मीठा कर दूंगा। ये दोनों ही अच्छे कार्य मैंने कल पर छोड़ दिये और खराब कार्य अपना लिया। रावण लक्ष्मण को वह नीति की शिक्षा देता है। जिसके अन्दर आध्यात्मिक सम्पदा एवं ताकत होगी, वही आपके अन्दर प्रकाश को प्रज्ज्वलित कर सकता है, वही महापुरुष आपको आत्मज्ञान की दीक्षा दे सकता है। जिसके पास आत्मज्ञान का खजाना हो, वही महापुरुष उस खजाने को आप तक पहुंचा सकता है। ऐसे घोर कलिकाल के समय में जहां सब जगह अन्धकार और अज्ञान है, ऐसे समय में भी गुरु महाराज जी ने ज्ञान देकर सबको तत्वज्ञानी बना दिया है। लेकिन अगर यह सोचते रहोगे कि

ज्ञान तो हमें हो गया, भजन करने की क्या जरूरत है, तो इससे कल्याण नही होगा।

कई भक्त हमारे पास आते हैं और कहते हैं कि माताजी! उपदेश लिये हुये तो हमें पच्चीस साल हो गए हैं, पर गुरु दरबार में तो हम एक या दो बार ही आये हैं। कोई कहता है कि बस, हमने तो हरिद्वार में ही दर्शन किये थे, हमें अब आने का समय ही नहीं मिलता। अरे भाई! जब इस संसार से शरीर छोड़कर जाओगे, तब भी तो यह गृहस्थ चलता ही रहेगा। आज अपने परिवार में तुम्हारे मां-बाप, सास-ससुर, पति-पत्नी और बेटा-बेटी हैं। उनसे पहले भी तो संसार में बहुत से लोग थे। वे भी शरीर छोड़कर चले गए, लेकिन उनका परिवार चलता ही रहा, उनकी घर-गृहस्थी चलती ही रही। उनके पीछे रोने वाला केवल दो-चार दिन ही रोयेगा। जब उसे भूख लगेगी, तो वह भोजन भी बनायेगा और जहां पैसे की जरूरत पड़ेगी तो काम भी करेगा। समय बीतने के साथ-साथ वह मृतकों को भूल जाता है।

वह कौन-सी ऐसी चीज है, जो मरने के बाद हमारे साथ जाएगी? वह कौन-सी ऐसी शक्ति है, जो समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करेगी? वे गुरु महाराज जी ही होते हैं, जो हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं। अगर ज्ञान को जानकर, उपदेश लेकर भजन ही नहीं किया, गुरु महाराज जी के दर्शन ही नहीं किए तो उपदेश लेने का कोई फायदा नहीं। यह तो ऐसे हुआ, जैसे कोई कीमती चीज खरीदकर उसे पिटारी में बन्द कर दिया और उसका जीवन में सेवन ही नहीं किया। बीमारी की दवाई तो डॉक्टर से ले आये, लेकिन उसे खाया नहीं, तो उससे कोई फायदा नहीं होगा, बीमारी ठीक नहीं होगी। रोग निदान के लिए हमें दवाई का सेवन करना ही होगा। इसीलिए भक्तों को बार-बार कहा जाता है कि उपदेश लेने के बाद रोज भजन जरूर करो।

संसार में माया का चक्र बहुत बड़ा है, उस चक्र में मनुष्य आसानी से फंस जाता है, लेकिन जो बार-बार सत्संग सुनता है, बार-बार गुरु महाराज जी के चरणों में मन को लगाता है, सेवा करता है, वह उस माया के चक्र से बच जाता है और भक्ति मार्ग में आगे बढ़ता जाता है। देख लो, गुरु दरबार में असंख्य भक्त हैं। उनमें कितने ऐसे भक्त हैं, जो कोई भी सत्संग प्रोग्राम नहीं छोड़ते, गुरु महाराज के दर्शन करना नहीं छोड़ते। उनकी यही इच्छा रहती है कि जहां भी मालिक का सत्संग-प्रवचन हो, वहीं पर हम पहुंचें, महाराज जी का दर्शन करके अपने को धन्य बनायें। संसार में वही सुखी है, जो गुरु महाराज जी के चरणों में निरन्तर मन को लगाकर रखता है। एक राजा के महल के नीचे एक साधु की झोंपड़ी थी। साधु रोज कहता था कि कुछ राजा से अच्छी गुजरी, कुछ राजा जैसी गुज़री। एक दिन राजा ने सुन लिया। राजा साधु से कहता है कि साधु! तू कैसे बोलता है कि कुछ राजा जैसी गुजरी? मेरे पास तो बहुत धन सम्पदा, परिवार, रानियां, दास-दासियां हैं और तेरे पास तो एक छोटी-सी झोंपड़ी है, तो तू कैसे कहता है कि कुछ राजा जैसे गुजरी और कुछ राजा से अच्छी गुजरी। साधु कहता है कि राजन्! तुम भी छत्तीस प्रकार के भोजन खाकर सोते हो और मैं भी नमक के साथ सूखी रोटी खाकर सोता हूँ। जब आपको नींद आ जाती है, तो आपको यह ज्ञान नहीं रहता है कि मैं मखमली गद्दों पर सोया हूं या चांदी के पलंग पर सोया हूं और मैं कच्ची मिट्टी के ढेर पर सोता हूं। उस वक्त हमें भी बाहर संसार की अनुभूति नहीं होती है। उस वक्त हम दोनों की अवस्था एक जैसी होती है, क्योंकि निद्रा में आदमी को यह आभास नहीं होता कि मेरे पास कितना धन वैभव है और स्वप्न अवस्था में मुझे भी यह ज्ञान नहीं रहता कि मैं फक्कड बाबा हूं, रात को मैंने क्या खाया था। इसीलिए मैंने यह कहा कि मेरी आप से भी अच्छी गुजरी। आप सुबह उठते ही राजकाज का चिन्तन करते हो। अपने मंत्रियों को बुला-बुलाकर काम सौंपते हो और मैं सुबह उठते ही भगवान का भजन करता हूं। मैं सुबह उठते ही भगवान के चरणों में अपना ध्यान लगाता हूं। हे राजन्! मेरी वह अवस्था आप से भी अच्छी है।

अनादिकाल से गुरु और शिष्य की परम्परा चली आ रही है। सब वेद-शास्त्रों में गुरु महाराज जी की महिमा बताई है। एक भक्त अगर सच्ची निष्काम भक्ति चाहता है और वह चाहता है कि मैं माया के बन्धनों से छूट जाऊं तो उसे सद्गुरु की शरण में जाना पड़ेगा। भक्त सहजोबाई कहती है-भगवान ने तो हमें जन्म दिया, पर गुरु महाराज जी ने माया-मोह के बन्धन से छुड़ाया।

SPIRITUAL KNOWLEDGE CANNOT BE ATTAINED WITHOUT A PERFECT MASTER

SHRI HANS JI MAHARAJ

Dear Premies, Only a perfect living master can reveal the perfect name of 'God', help us realize that primordial vibration which stills the mind and is the source of utmost peace and bliss. Saint Kabirdas ji has described the Word in the following verse:

"Shabd bina surati aandhari, kaho kahan ko jaye

Dwar na pave shabd ka, phir-phir bhatka khaye

Koti naam sansaar mein, tate mukti na hoye

Aadi naam jo gupt jap, bujhe birla koi"

The Surati is blind without being anchored to the Word, where else can it go? Unable to find the door to the 'Word', one keeps revolving in the cycle of life and death. God is called by a multitude of names in this world, but none that help attain salvation. Only a handful know the 'Primordial Name' which is remembered secretly within.

The 'Primordial Name' mentioned by Kabirdas ji cannot be revealed by saints or masters of previous centuries, neither can it be explained through the written or spoken words; Guru Nanakdev ji also said:

"Eko simaro nanaka, jal thal rahyo samaya"

Remember that one True Name which pervades all the water, earth, all life. This 'Holy Name' can only be realized through the grace of a living Perfect Master. The root of life, the 'Primordial Vibration' cannot be destroyed in any age, and the knowledge of this Holy Name exists in this age too. Lord Ram, and Lord Krishna became disciples of their Gurus during their time. Similarly, you too can benefit from living Perfect Masters. You must also think about the fact that upon dying this body will perish, however the 'aatma' or the soul is eternal. It cannot be destroyed. It either adopts a new body, or it becomes one with the supreme divine.

All incarnations, great saints and 'True-Masters' that have lived became one with God due to attainment of 'Self-Realization'. God rests in our hearts, and thus the Perfect Master who is God in human form rests within our hearts too. A Spiritual Master that imparts the wisdom of Spiritual knowledge and helps us realize the 'One' that permeates all life, is bound to have the Divine knowledge of past incarnations, and great spiritual masters. Won't the essence of Saint Kabirdas ji's soul rest within such a Divine Master? We must think about this deeply. We too need to attain the Spiritual Knowledge possessed by the Masters.

People often say that first one must eliminate

lust, anger, greed, and attachment. Only then can Spiritual knowledge be attained. People keep talking of removing ignorance, all the while being in the dark themselves. There is no such thing as ignorance. For instance, I wasn't present at this venue before. If there was an attendance register, I would have been marked absent. But now that I am present here, what has happened to my absence? People would remark that my absence has vanished, or destroyed, or no longer exists. However, absence is not an entity in itself. It only exists when I am not present. My presence has a form, my absence does not. Similarly, the absence of knowledge is ignorance. The absence of sunlight is darkness. Darkness is not an entity. That is why, in order to dispel ignorance, knowledge is essential, just as light is to eliminate darkness. However, one cannot attain 'Spiritual Knowledge' without a Spiritual Master.

"Bin guru hoi ki gyan, gyan ki hoi virag bin

Gawahin ved-puran, sukh ki lahahin hari bhagati bin"

In our holy texts and scriptures, it is said that no one can attain the knowledge of God without a Spiritual Master; and there can be no devotion without knowledge and no liberation without devotion. Our scriptures are filled with the glory of the Spiritual teacher because it is the Guru who helps us realize the Primordial Word, and the Divine Light which are beyond the grasp of the five senses, the mind and intellect of man. Saint Tulsidas ji said-

"Shri guru pad nakh mani gan jyoti.

Sumirat divya drishti hiya hoti."

By meditating upon the Spiritual Master's form, divine sight is realized.

"Karandhaar satguru drid nava

Durlabh saaj sulabh kari pava"

In the Ramcharitmanas, Lord Ram himself remarks on the greatness of the Perfect Master (Satguru). The human body is the boat that can help us cross this ocean of life and death, and the Spiritual Master steers our boat through the trials of this worldly ocean. It is the Master that helps us harness our boat to achieve the rare and difficult chance of realizing God.

We have received this human body to liberate ourselves from the cycle of life and death. We have God's blessing through this human form, but are we utilizing the benefit of this blessing? Not at all. When will we benefit from the Lord's blessing?

"Ram kripa nasahin sab roga, Jo ehin bhanti bane sanyoga

Satguru vaid vachan vishwasa, sanyam yeh na vishay kar asha"

What is the purpose of human life? Devotion to God is like the life giving sanjeevani herb, that eliminates all suffering, and that devotion comes from adopting the teachings of a Perfect Master. Resolute faith in the Satguru's teachings is the only way to attain devotion that can lead to salvation. All other solutions are of no avail. God's devotion has been described as the 'Divine Light'–

"Ram bhakti chintamani sundar. Basahin garud jake ur andar.

Param prakash roop din rati. Nahin chahiye kachhu diya ghrit bati"

Devotion to the Lord is like a shining jewel, and the heart in which it rests experiences the Supreme Divine Light which shines day and night, and needs no external lamp, wick or oil to be lit.

In the Geeta, Lord Krishna tells Arjun to cast aside all other rituals and religious practices and seek only his shelter. In doing so, he would be free him from all sin. Only devotion to God is true religion. People do not understand this. Only through devotion can one attain salvation.

साधना के प्रकार और उनकी सिद्धि

सनातन धर्म में हजारों तरह की साधनाओं का वर्णन मिलता है। साधना से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। व्यक्ति सिद्धियां इसलिए प्राप्त करना चाहता है, क्योंकि या तो वह उससे सांसारिक लाभ प्राप्त करना चाहता है या फिर आध्यात्मिक लाभ। मूलत: साधना के चार प्रकार माने जा सकते हैं- तंत्र साधना, मंत्र साधना, यंत्र साधना और योग साधना। चारों ही तरह की साधना के कई उप प्रकार हैं। आओ जानते हैं साधना के तरीके और उनसे प्राप्त होने वाले लाभ:-

तंत्र साधना- तांत्रिक साधना दो प्रकार की होती है- एक वाम मार्गी तथा दूसरी दक्षिण मार्गी। वाम मार्गी साधना बेहद कठिन है। वाम मार्गी तंत्र साधना में 6 प्रकार के कर्म बताए गए हैं, जिन्हें षट् कर्म कहते हैं।

शांति, वक्ष्य, स्तम्भनानि, विद्वेषणोच्चाटने तथा।
गोरणों तनिसति षट कर्माणि मणोषण:।।

अर्थात शांति कर्म, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी साधना, रसायन क्रिया तंत्र के ये 9 प्रयोग हैं।

रोग कृत्वा गृहादीनां निराण शन्तिर किता।
विश्वं जानानां सर्वेषां निधयेत्व मुदीरिताम्।।
पूधत्तरोध सर्वेषां स्तम्भं समुदाय हृतम्।
स्निग्धाना द्वेष जननं मित्र, विद्वेषण मतत।
प्राणिनाम प्राणं हरपां मरण समुदाहृमतं।।

अर्थात जिससे रोग, कुकृत्य और ग्रह आदि की शांति होती है, उसको शांति कर्म कहा जाता है और जिस कर्म से सब प्राणियों को वश में किया जाए, उसको वशीकरण प्रयोग कहते हैं तथा जिससे प्राणियों की प्रवृत्ति रोक दी जाए, उसको स्तम्भन कहते हैं तथा दो प्राणियों की परस्पर प्रीति को छुड़ा देने वाला नाम विद्वेषण है और जिस कर्म से किसी प्राणी को देश आदि से पृथक कर दिया जाए, उसको उच्चाटन प्रयोग कहते हैं तथा जिस कर्म से प्राण हरण किया जाए, उसको मारण कर्म कहते हैं।

साधना भी कई प्रकार की होती है। मंत्र से किसी देवी या देवता को साधा जाता है और मंत्र से किसी भूत या पिशाच को भी साधा जाता है। मंत्र का अर्थ है-मन को एक तंत्र में लाना। मन जब मंत्र के अधीन हो जाता है, तब वह सिद्ध होने लगता है। 'मंत्र साधना' भौतिक बाधाओं का आध्यात्मिक उपचार है। मुख्यत:- 3 प्रकार के मंत्र होते हैं- 1. वैदक मंत्र 2. तांत्रिक मंत्र और 3. शाबर मंत्र। मंत्र जप के भेद- 1. वाचिक जप 2. मानस जप और 3. उपांशु जप। वाचिक जप में ऊंचे स्वर में स्पष्ट शब्दों में मंत्र का उच्चारण

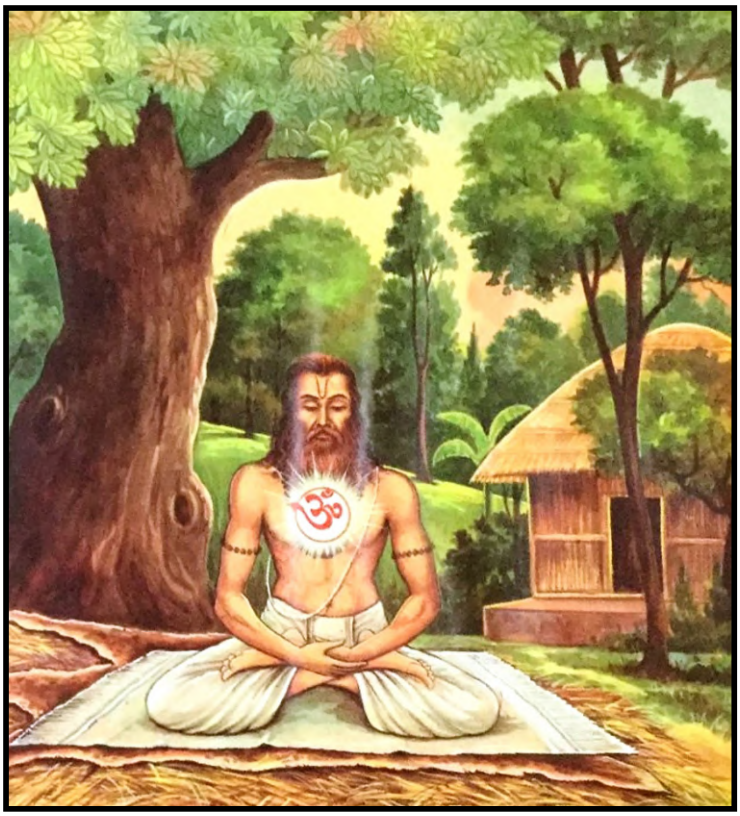

किया जाता है। मानस जप का अर्थ मन ही मन जप करना। उपांशु जप का अर्थ जिसमें जप करने वाले की जीभ या ओष्ठ हिलते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन आवाज नहीं सुनाई देती। बिल्कुल धीमी गति में जप करना ही उपांशु जप है।

मंत्र नियम- मंत्र-साधना में विशेष ध्यान देने वाली बात है- मंत्र का सही उच्चारण। दूसरी बात जिस मंत्र का जप अथवा अनुष्ठान करना है, उसका अर्घ्य पहले से लेना चाहिए। मंत्र सिद्धि के लिए आवश्यक है कि मंत्र को गुप्त रखा जाए। प्रतिदिन के जप से ही सिद्धि होती है। किसी विशिष्ट सिद्धि के लिए सूर्य अथवा चंद्रग्रहण के समय किसी भी नदी में खड़े होकर जप करना चाहिए। इसमें किया गया जप शीघ्र लाभदायक होता है। जप का दशांश हवन करना चाहिए और ब्राह्मणों या गरीबों को भोजन कराना चाहिए। साधना सबसे सरल है। बस यंत्र लाकर और उसे

सिद्ध करके घर में रखें। लोग तो अपने आप कार्य सफल होते जाएंगे। यंत्र साधना को कवच साधना भी कहते हैं। यंत्र को दो प्रकार से बनाया जाता है- अंक द्वारा मंत्र द्वारा। यंत्र साधना में अधिकांशत: अंकों से संबंधित यंत्र अधिक प्रचलित हैं। श्रीयंत्र, घंटाकर्ण यंत्र आदि अनेक यंत्र ऐसे भी हैं जिनकी रचना में मंत्रों का भी प्रयोग होता है और ये बनाने में अति क्लिष्ट होते हैं।

इस साधना के अंतर्गत कागज अथवा भोजपत्र या धातु पत्र पर विशिष्ट स्याही से या किसी अन्यान्य साधनों के द्वारा आकृति, चित्र या संख्याएं बनाई जाती हैं। इस आकृति की पूजा की जाती है अथवा एक निश्चित संख्या तक उसे बार-बार बनाया जाता है। इन्हें बनाने के लिए विशिष्ट विधि, मुहूर्त और अतिरिक्त दक्षता की आवश्यकता होती है। यंत्र या कवच भी सभी तरह की मनोकामना पूर्ति के लिए बनाए जाते हैं। जैसे वशीकरण, सम्मोहन या आकर्षण, धन अर्जन, सफलता, शत्रु निवारण, भूत बाधा निवारण, होनी-अनहोनी से बचाव आदि के लिए यंत्र या कवच बनाए जाते हैं।

दिशा- प्रत्येक यंत्र की दिशाएं निर्धारित होती हैं। धन प्राप्ति से संबंधित यंत्र या कवच पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके रखे जाते हैं तो सुख-शांति से संबंधित यंत्र या कवच पूर्व दिशा की ओर मुंह करके रखे जाते हैं। वशीकरण, सम्मोहन या आकर्षण के यंत्र या कवच उत्तर दिशा की ओर मुंह करके, तो शत्रु बाधा निवारण या क्रूर कर्म से संबंधित यंत्र या कवच दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके रखे जाते हैं। इन्हें बनाते या लिखते वक्त भी दिशाओं का ध्यान रखा जाता है। सभी साधनाओं में श्रेष्ठ मानी गयी है-योग साधना। यह शुद्ध, सात्विक और प्रायोगिक है। इसके परिणाम भी तुरंत और स्थायी महत्व के होते हैं। योग कहता है कि चित्त वृत्तियों का निरोध होने से ही सिद्धि या समाधि प्राप्त की जा सकती है-**'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'**। मन, मस्तिष्क और चित्त के प्रति जाग्रत रहकर योग साधना से भाव, इच्छा, कर्म और विचार का अतिक्रमण किया जाता है। इसके लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार–इन 5 योग को प्राथमिक रूप से किया जाता है। उक्त 5 में अभ्यस्त होने के बाद धारणा और ध्यान स्वत: ही घटित होने लगते हैं। योग साधना के अभ्यास से अष्ट सिद्धियां सहज ही सिद्ध हो जाती हैं। सिद्धियों के सिद्ध हो जाने के बाद व्यक्ति अपनी सभी तरह की मनोकामना पूर्ण कर सकता है। किन्तु योग साधकों का लक्ष्य सिद्धि प्राप्त कर उनके माध्यम से कोई मनोकामना की पूर्ति करना नहीं है। योग साधना का उद्देश्य सांसारिक सुखों की बात ही क्या स्वर्ग और मोक्ष तक के सुख की आकांक्षा का अभाव होना है। योग का अभिप्राय है-आत्मा-परमात्मा का एकीकरण। सभी भूत-प्राणियों में एक ही परमेश्वर का दर्शन करना। योग साधना का उपदेश समय के श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु कराते हैं। अन्य साधनाओं से सांसारिक किसी एक वस्तु को प्राप्त करना या किसी एक दु:ख को दूर करना है; किन्तु योग साधना से जन्म-जन्मान्तरों के दु:ख, कष्ट, क्लेश और अभाव दूर हो जाते हैं। देव-दुर्लभ मानव तन का एकमेव उद्देश्य परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार करना ही है। इसलिए सांसारिक विषय-वासनाओं से मन हटाकर परमात्मा के भजन-सुमिरण में लगाएं, यही वह साधना है जिसकी सिद्धि के बाद कुछ भी जानना या प्राप्त करना शेष नहीं रहता। हम सभी को सद्गुरु की खोज कर योग साधना में ही संलग्न होना चाहिए। यही मानव जीवन की सार्थकता और सफलता है। ■

प्रेरक प्रसंग

सुख की नींद

एक बार गौतम बुद्ध एक जंगल में पत्तों के आसन पर विराजमान थे। उसी समय उनका एक प्रिय शिष्य उनके पास आया और बड़े ही प्यार से पूछा- 'भंते, कल आप सुखपूर्वक सोऐ ही होंगे।' बुद्ध ने कहा- 'हाँ कुमार, कल मैं सुख की नींद सोया।' पर भगवन! कल रात तो हिमपात हो रहा था और ठंड भी ज्यादा थी। शीत हवा तेजी से बह रही थी। आपके पत्तों का आसन तो एकदम पतला है, फिर भी आप कहते हैं कि आप सुख की नींद सोए।

बुद्ध बोले- 'अच्छा कुमार, मान लो, किसी गृहपति के पुत्र का कक्ष चारों तरफ से बंद हो और उसके पलंग पर चार अंगुल मोटा गद्दा बिछा हो, तकिया हो, ऊपर आरामदायक चादर हो और सेवा के लिए चार सेविकाएं तत्पर हों, तब क्या वह गृहपति पुत्र सुख से सो सकेगा?' 'हाँ, भंते, इतनी सुख-सुविधाएं हों, तो उसे सुख की नींद आएगी ही।' यदि उस गृहपति पुत्र को रोग के कारण शारीरिक या मानसिक कष्ट हो, तो क्या वह सुख से सोएगा?' नहीं, भंते वह सुख से नहीं सो सकेगा।' बुद्ध ने कहा- 'और यदि उस गृहपति पुत्र को द्वेष या मोह से उत्पन्न कोई शारीरिक या मानसिक कष्ट हो, तो क्या वह सुख से सोएगा?' 'नहीं भंते, वह सुख से नहीं सो सकेगा।'

तब बुद्ध ने कहा- 'कुमार! राग, द्वेष और मोह से उत्पन्न होने वाली मेरी जलन जड़-मूल से नष्ट हो गई है। इसी कारण शारीरिक या मानसिक किसी तरह का कोई कष्ट हो, उसकी अनुभूति न होने के कारण मुझे सुख की नींद आई थी। वास्तव में नींद को अच्छे बिस्तर की आवश्यकता नहीं होती। तुमने तो सुना ही होगा कि सूली के ऊपर भी अच्छी नींद आ जाती है। सुखद नींद के लिए सुखद बिस्तर नहीं, चित्त का शांत होना सबसे जरूरी है। परमात्मा के ध्यान-सुमिरण से मन और चित्त शांत होता है। इसलिए सदैव परमेश्वर का सुमिरण करते रहेंगे तो नींद ही क्या, मृत्यु भी विचलित नहीं करेगी।■

तजौ मन, हरि बिमुखनि कौं संग

तजौ मन, हरि-बिमुखनि कौं संग।
जिनकै संग कुमति उपजति है, परत भजन में भंग।।
कहा होत पय पान कराऐं, बिष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाऐं, स्वान न्हवाऐं गंग।। 1।।
खर कौं कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषन अंग।
गज कौं कहा सरित अन्हवाऐं, बहुरि धरै वह ढंग।।2।।
पहन पतित बान नहिं बेधत, रीतो करत निषंग।
सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग।।3।।

श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी असम में राजकीय अतिथि बने

मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने किया जोरदार स्वागत

गुवाहाटी। द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी 12 अक्टूबर को राजकीय अतिथि के तौर पर तीन दिवसीय दौरे पर असम पहुंचे। गुवाहाटी में गोपीनाथ बोरदोलोई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री प्रदीपन जी एवं तमाम सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों ने पारंपरिक रूप में श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी का भव्य स्वागत किया।

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा गुवाहाटी में द हंस फाउण्डेशन के प्रेरणास्रोत श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी को असमिया गमछा ओढ़ाकर स्वागत करते हुए

असम पहुंचने पर श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी ने वहां के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा से शिष्टाचार भेंट की। इस मौके पर मुख्यमंत्री श्री सरमा ने डॉ. माताश्री मंगला जी एवं श्री भोले जी महाराज को पारंपरिक असमिया गमछा ओढ़ाकर उनका जोरदार अभिनंदन किया। श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी ने मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा को भगवान बाबा केदारनाथ मंदिर की काष्ठ निर्मित प्रतिकृति भेंट की।

इस शिष्टाचार भेंट के दौरान श्री भोले जी महाराज, डॉ. माताश्री मंगला जी एवं मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा ने असम में विभिन्न सेवाओं एवं द हंस फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों पर चर्चा की। इस मौके पर मुख्यमंत्री

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी गुवाहाटी में असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा को काष्ठ नर्मित भगवान केदारनाथ मंदिर की प्रतिकृति भेंट करते हुए दाएं तथा श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी कामाख्या मंदिर में पूजा करने बाद बाएं

श्री हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि परोपकारी संस्था द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत माता मंगला जी एवं श्री भोले जी महाराज से मिलकर बहुत खुशी हुई। क्षेत्र में समाज सेवा और मानव समाज के समग्र कल्याण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर व्यापक चर्चा की। उन्होंने कहा कि मैं असम की जनता की तरफ से हमारे राज्य में द हंस फाउंडेशन द्वारा की जारी सेवाओं के लिए कोटि-कोटि आभार व्यक्त करता हूं।

गुवाहाटी। श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी ने मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपने हमारा जो स्वागत-सत्कार किया, इसके लिए हम आभारी हैं। हम असम के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर सेवा के कार्य कर रहे हैं। सेवा के पटल पर हम हमेशा असम के लोगों के साथ खड़े हैं।

असम दौरे के दूसरे दिन पूज्य माताश्री मंगला जी एवं श्री भोले जी महाराज जी ने नीलांचल पर्वतीय क्षेत्र स्थित 51 शक्ति पीठों में से एक प्रसिद्ध कामाख्या देवी मंदिर में पूजा-अर्चना कर देश एवं प्रदेश की खुशहाली, संपन्नता और सुख-समृद्धि की कामना की। ■

श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी के सानिध्य में द हंस फाउण्डेशन द्वारा

असम में 5000 गरीब जोड़ों का सामूहिक विवाह संपन्न

गुवाहाटी। द हंस फाउण्डेशन के प्रेरणास्रोत श्री भोले जी महाराज और करुणामयी डॉ. माताश्री मंगला जी को आज किसी परिचय की जरूरत नहीं। उनकी यश–कीर्ति चारों दिशाओं में फैल रही है। जहां वे देश–विदेश में अध्यात्म ज्ञान की अलख जगा रहे हैं, वहीं "सेवा भी और सम्मान भी" की मुहिम के तहत जन–जन तक अपनी सेवाएं पहुंचा रहे हैं। कन्यादान और गरीब सामूहिक विवाह संस्कार की सेवाओं में द हंस फाउण्डेशन ने आज एक नए आयाम को छुआ है। उत्तर पूर्व भारत के असम राज्य में विगत कई वर्षों से गरीब एवं जरूरतमंद जनजातीय जोड़ों को सामाजिक पहचान देने के लिए 5,000 से अधिक विवाह संस्कार कराना आज एक मिसाल बन गया है। उत्तर पूर्वोत्तर के असम राज्य के अनेक जिलों में स्थानीय सामूहिक विवाह संस्कार समिति के साथ मिलकर श्री भोले जी महाराज एवं करुणामयी माताश्री मंगला जी द्वारा इस साल 5000 सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान को संपन्न करने के लिए अनेक जिलों में सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान का आयोजन किया गया। प्रथम एवं द्वितीय चरण में 3500 जोड़ों को विवाह संस्कार के गठबंधन में बांधा गया। इसी कड़ी में 14 अक्टूबर 2022 को असम के उत्तरी लखीमपुर में आयोजित सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान में श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने राजकीय अतिथि के रूप में स्वयं पहुंचकर 1004

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी असम के उत्तरी लखीमपुर जिला में सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान में भाग लेते हुए। साथ में स्थानीय सामूहिक विवाह संस्कार समिति के पदाधिकारी

असम के उत्तरी लखीमपुर में सामूहिक विवाह संस्कार में वरमाला पहनाकर एक दूजे के हुए वर एवं वधू

जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया। सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान का अगला कार्यक्रम 8 दिसंबर 2022 को असम के उदालगुरी जिले में आयोजित किया जाएगा, जहां पर 500 जोड़ों को विवाह के पवित्र बंधन में बांधा जाएगा इस प्रकार सेवा की अविरल धारा अनवरत रूप से चलती रहेगी। विवाह संस्कार में बंधने वाले प्रत्येक जोड़े को वैवाहिक तोहफे के रूप में घर गृहस्थी का सारा सामान श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी के आशीर्वाद के रूप में दिया गया।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी के सानिध्य में आसाम के उत्तरी लखीमपुर जिला में द हंस फाउण्डेशन द्वारा 1004 गरीब जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्पन्न हुआ। असम और अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती जिला उत्तरी लखीमपुर के त्याग क्षेत्र तथा नाउबैसा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत हारमती बागान के आदिवासी रंगमंच के परिसर में उत्तरी लखीमपुर जिला विवाह संस्कार समिति के तत्वावधान में तथा द हंस फाउंडेशन के सहयोग से सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान का आयोजन किया गया। विवाह अनुष्ठान में कुल 1004 जोडों को सनातन धर्म की परंपरा के अनुसार तथा आदिवासी रीति-नीतियों एवं विवाह पद्धति के अनुसार विवाह के अटूट बंधन में बांधा गया। वहां बनाये गये अग्नि कुंड में जोड़ों ने अग्नि को साक्षी मानकर एक-दूसरे का साथ निभाने का प्रण लिया। बोगोनदी, धेमाजी और नाहरकटिया में सामूहिक विवाह सम्पन्न कराये गये। विवाह के बाद झूमुर गीत और नृत्य का भी प्रदर्शन किया गया।

हारमती विवाह संस्कार समिति के

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से असम के उत्तरी लखीमपुर जिला में सामूहिक विवाह संस्कार अनुष्ठान में भाग लेते हुए जनजातीय जोड़े। द हंस फाउण्डेशन द्वारा असम की पारम्परिक रीति-रिवाज से इनका सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया गया

प्रबंधक श्री काशीनाथ तांती ने बताया कि लखीमपुर जिला विवाह संस्कार समिति और द हंस फाउण्डेशन ऐसे जोड़ों का वैवाहिक जीवन शुरू करने में मदद कर रहा है जो जोड़े आर्थिक रूप से कमजोर हैं तथा विवाह करने में असमर्थ हैं।

सामूहिक विवाह समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीश्री एलेंगी सत्र के सत्राधिकार विपुल देव गोस्वामी, विशिष्ट अतिथि के रूप में द हंस फाउण्डेशन के उत्तर पूर्व के कोआर्डिनेटर प्रियंका पालित, नेपाली साहित्य सभा से जदुनाथ वशिष्ठ, हारमती बागान के प्रबंधक एमके प्रधान, आनंदराम भुइयां, लखी गोगोई सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

लखीमपुर के त्याग क्षेत्र में लखीमपुर जिला विवाह संस्कार समिति के तत्वावधान में द हंस फाउंडेशन के सहयोग से गरीब जोड़ों का विवाह संस्कार संपन्न हुआ। विवाह संस्कार हवन तथा नाम कीर्तन दोनों विधियों से कराया गया। जिन जोड़ों को हवन के द्वारा विवाह संस्कार स्वीकार था उनका विवाह हवन यज्ञ द्वारा और जिन जोड़ों को नाम कीर्तन के द्वारा विवाह संस्कार मान्य था, उनका विवाह नाम कीर्तन के द्वारा कराया गया।

इस सामूहिक विवाह संस्कार में श्रीश्री महारा कुमुठा सत्र के सत्राधिकारी बिहपुरिया के सत्राधिकारी योगेंद्र लगाशू, लखीमपुर जिला उपायुक्त सुमित सत्तावन तथा लखीमपुर पुलिस अधीक्षक वेदांता माधव राजखोवा के अलावा जिला व पुलिस प्रशासन के कइ आला अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में हंस कल्चरल सेंटर के सेक्शन हैड विकास वर्मा तथा प्रोजेक्ट को-आर्डिनेटर दिनेश रावत उपस्थित रहे। इतने सारे जोड़ों का एक साथ विवाह होने का दृश्य अत्यंत रमणीय रहा।

विवाह समारोह का ऐसा सुहावना दृश्य शायद ही कहीं देखने को मिले। प्रत्येक जोड़े को द हंस फाउण्डेशन की तरफ से कपड़े से भरा एक सूटकेस, नवविवाहित जोड़े को उसके घर में काम आने वाले बर्तन, दुल्हन और दूल्हे के लिए शादी के कपड़े का जोड़ा, सिंगार का सामान, कम्बल, तकिया तथा मच्छरदानी आदि सभी सामग्री उपहार के रूप में दी गई। इस सामूहिक विवाह समारोह को देखने के लिए लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा। कार्यक्रम का सारा खर्च द हंस फाउण्डेशन द्वारा उठाया गया।

लखीमपुर में होने वाले इस विवाह संस्कार समारोह के सूत्रधार प्रदीपन सीमांत चेतना मंच के राष्ट्रीय् सह संयोजक हैं। द हंस फाउण्डेशन द्वारा संपन्न हुए इस सामूहिक विवाह समारोह को सुचारू रूप से आयोजित करने के लिए लखीमपुर जिला विवाह संस्कार समिति का गठन किया गया था। यह समिति अपनी देखरेख में समुचित आयोजन की व्यवस्था कर रही थी। इस सामूहिक विवाह समारोह के सफल आयोजन पर लखीमपुर विवाह संस्कार समिति के अध्यक्ष डा. दिलीप कुमार झा, सचिव भवबरगोहाइ, तपन बेजबरुवा, लाचितदास, आदित्य शर्माबरुवा तथा विकास प्रसाद के व्यवस्था मूलक कार्यों की आम जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ■

जनकल्याण सत्संग समारोह में उमड़ा भक्तों का सैलाब

हर साल हरिद्वार में मनायी जायेगी श्री हंस जी महाराज की जयंती

हरिद्वार। प्रख्यात आध्यात्मिक गुरु, समाज सेवी तथा द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी के सानिध्य में ऋषिकुल कालेज के मैदान में आयोजित दो दिवसीय विशाल जनकल्याण सत्संग समारोह भारी सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। हंस ज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों के अलावा अमेरिका, कनाडा तथा नेपाल आदि देशों से श्रद्धालु-भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा।

भारी संख्या में भक्तों की मौजूदगी से अभिभूत होकर डॉ. माताश्री मंगला जी ने घोषणा करते हुए कहा कि अब योगीराज श्री हंस जी महाराज की पावन जयंती हर साल हरिद्वार में ही मनायी जायेगी। उनकी इस घोषणा का पंडाल में उपस्थित सभी प्रेमी भक्तों ने करतल ध्वनि से जोरदार स्वागत किया। माता श्री मंगला जी ने कहा कि योगीराज श्री हंस जी महाराज और माता श्री राजेश्वरी देवी के आशीर्वाद से हम देवभूमि उत्तराखंड के साथ-साथ पूरे देश में सत्संग, ज्ञान प्रचार और मानव सेवा के कार्य कर रहे हैं, लेकिन धर्मनगरी हरिद्वार में हमारा यह पहला सत्संग समारोह है। उन्होंने कहा कि पिछले कई सालों से यहां के श्रद्धालु-भक्त सत्संग का प्रोग्राम

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में विशाल जनकल्याण सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए

मांग रहे थे।

डॉ. माताश्री मंगला जी ने कहा कि हरिद्वार भगवान विष्णु और भगवान शिव का द्वार होने के साथ-साथ श्री भोले जी महाराज की जन्मस्थली और योगीराज श्री हंस जी महाराज की कर्मस्थली रही है। हरिद्वार से ही श्री हंस जी महाराज ने अध्यात्म ज्ञान का प्रचार शुरू किया था। उन्होंने कहा कि हरिद्वार भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के करोड़ों लोगों की आस्था और श्रद्धा का केंद्र है। उन्होंने कहा कि मां गंगा बिना किसी भेदभाव के सभी की प्यास को मिटाकर शीतलता प्रदान करती है। करोड़ों लोगों के पाप धुलने के बाद भी गंगा हमेशा निर्मल बनी रहती है। उन्होंने कहा कि हम भी मां गंगा से शिक्षा लेकर अपने जीवन से छल-कपट, नफरत, वैमनस्य और अहंकार को त्यागें तथा समाज में पवित्रता, निर्मलता का वातावरण बनाकर परोपकार और मानव सेवा के कार्य करें।

डॉ. माताश्री मंगला जी योगीराज श्री हंस जी महाराज की महिमा का गुणगान करते हुए कहा कि श्री हंस जी महाराज का सारा जीवन सत्संग, ज्ञान प्रचार और मानव सेवा को समर्पित था। उनके आशीर्वाद से आज द हंस फाउंडेशन द्वारा श्री हंस जी महाराज एवं डॉ. माताश्री राजेश्वरी के नाम पर उत्तराखण्ड के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों में समाज सेवा और जनकल्याण के कार्य किये जा रहे हैं।

डॉ. माताश्री मंगला जी ने योगीराज श्री हंस जी महाराज की प्रतिमा के समक्ष श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए कहा कि आज उनकी पावन जयंती के उपलक्ष्य में तीर्थनगरी हरिद्वार में इस सत्संग समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वैसे तो दुनिया में प्रतिदिन हजारों लोग जन्म लेते हैं

हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के प्रवचन सुनने के लिए हंस ज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर) द्वारा आयोजित जनकल्याण सत्संग समारोह में उमड़ा श्रद्धालु-भक्तों का सैलाब

लेकिन जयंतियां केवल उन्हीं महापुरुषों की मनाई जाती हैं, जिन्होंने स्वयं भी अध्यात्म ज्ञान की अनुभूति की और उस ज्ञान के प्रकाश से दूसरे लोगों के जीवन को भी प्रकाशित किया। उन्होंने कहा कि श्री हंस जी महाराज अपने समय के ऐसे ही महापुरुष थे जिन्होंने सत्संग और अध्यात्म ज्ञान के माध्यम से देश-विदेश में फैले करोड़ों लोगों के हृदय में राष्ट्र प्रेम, मानवीय एकता, शांति, सद्भाव, परोपकार और मानव सेवा की ज्योति जलाई।

इस मौके पर श्री भोले जी महाराज और डॉ. माताश्री मंगला जी ने श्री हंस जी महाराज के प्रवचनों पर आधारित पुस्तक "ऋते ज्ञानान्न मुक्ति, ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं" का विमोचन किया।

ऋषिकुल कालेज मैदान में जनकल्याण सत्संग समारोह में उपस्थित संत-महात्मा एवं बाईगण

डॉ. माताश्री मंगला जी ने युवाओं को नशे से दूर रहने की अपील करते हुए कहा कि नशे से स्वास्थ्य तो खराब होता ही है, इसके साथ ही धन की बरबादी भी होती है और घर-परिवार में झगडे-फसाद होते हैं। उन्होंने युवाओं को नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक रूप से शिक्षित और जागरूक किये जाने पर बल दिया। डॉ. माताश्री मंगला जी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का उद्घोष करते हुए कहा कि हमें बेटी और बेटे में भेदभाव नहीं करना चाहिए। हमारे लिए बेटी और बेटा दोनों ही भगवान के उपहार हैं।

डॉ. माताश्री मंगला जी ने समारोह में उपस्थित श्रद्धालु-भक्तों का आह्वान किया कि वे अध्यात्म ज्ञान को जानें, अपने आत्मबल को मजबूत करें तथा समाज में प्रेम, शांति और सदभाव का वातावरण बनाने के लिए आगे आयें। उन्होंने कहा कि हम थोड़े समय के लिए संसार में आये हैं, हमेशा यहां पर नहीं रहना। इसलिए बच्चों को अच्छे संस्कार दें, मां-बाप की सेवा और सम्मान करें।

हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में आयोजित जनकल्याण सत्संग समारोह में प्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री सुरेश वाडेकर एवं श्रीमती पदमा वाडेकर जी ने श्री हंस जी महाराज की महिमा, सत्संग, ज्ञान, भक्ति, गुरु एवं शिव की महिमा के भजन प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया

उन्होंने कहा कि स्वर्ग और नरक कहीं बाहर नहीं, बल्कि इसी धरती पर हैं। सत्संग और ज्ञान के प्रचार से ही हम इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

इस मौके पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज कहा कि सत्संग हमारे मन के विकारों को दूर कर आत्मिक शांति और आनंद प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि सत्संग और संतों का सानिध्य पाकर दुष्ट प्रवृत्ति के लोग भी सुधर जाते हैं। श्री भोले जी महाराज ने श्री हंस जी महाराज की महिमा से जुड़ा भजन–"प्रभु हंस की दया से सब काम हो रहा है", प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम में मुम्बई से पधारे प्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री सुरेश वाडेकर ने श्री गणेश वंदना-"ओम गणपतये नमो नमः, सिद्धि विनायक नमो नमः" से अपने भजनों की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने–"श्री हंस जी के नाम का तुम ले लो सहारा", "लेके पूजा की थाली, जोत मन में जगाली, तेरी आरती उतारूं भोलेनाथ", "शिव–शिव, शिव–शिव रट ले बंदे, जीवन है ये थोड़ा" तथा "राम तेरी गंगा मैली हो गई" आदि भजनों की प्रस्तुति कर श्रद्धालुओं को भक्ति, प्रेम और आनंद के रस से सराबोर कर दिया।

मथुरा–वृंदावन से पधारे श्री बृज भजन मंडली के गायक श्री कालीचरण ने-"भूला हुआ मुसाफिर मंजिल को पा रहा है, श्री हंस नाम प्यारा दिल में समा रहा है" तथा "भोले जी, मंगला माता की जोड़ी कितनी प्यारी है" आदि भजन प्रस्तुत कर श्री हंस जी महाराज, श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी की महिमा का गुणगान किया। इससे पूर्व ऋषिकुल संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों ने श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी के सम्मान में वैदिक ऋचाओं का मंगल गान किया। आसाम से आये कलाकारों ने असम का प्रसिद्ध बिहु नृत्य एवं लोकगीत प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। लेह-लदाख से पधारे कलाकारों ने भी लोकगीत एवं लोकनृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस मौके पर महात्मा शिवकृपानंद जी, महात्मा हरिप्रिया तथा देश के विभिन्न तीर्थों से पधारे संत-महात्माओं ने भी श्री हंस जी महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशाल भंडारा और निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन भी किया गया। चिकित्सा शिविर में 5500 से भी अधिक लोगों ने निःशुल्क डाक्टरी परामर्श और दवाइयां लेकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। ■

पत्रकार वार्ता में बोले श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी

हरिद्वार में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनायेगा द हंस फाउंडेशन

हरिद्वार। आध्यात्मिक गुरु एवं द हंस फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने कहा है कि हरिद्वार में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करने के साथ-साथ उनके स्तर को भी बेहतर बनाया जायेगा।

हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान हरिद्वार प्रेस क्लब के पदाधिकारी परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ.माताश्री मंगला जी को पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत करते हुए

ऋषिकुल कालेज के मैदान में आयोजित जनकल्याण सत्संग समारोह के दौरान पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए माता श्री मंगला जी ने कहा कि द हंस फाउंडेशन द्वारा उत्तराखंड के अलावा देश के सभी राज्यों में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, शुद्ध पेयजल, पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती तथा श्री हंस गौशालाओं आदि का संचालन किया जा रहा है। द हंस

हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में जनकल्याण सत्संग समारोह के दौरान आयोजित पत्रकार वार्ता मे श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के साथ बातचीत करते हुए इलैक्ट्रोनिक एवं प्रिंट मीडिया से जुड़े पत्रकार बंधु

फाउंडेशन शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में गरीब और जरूरतमंद लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर में बदलाव लाने का काम कर रहा है।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि हरिद्वार दुनिया का प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां पतित पावनी मां गंगा के साथ-साथ चंडी देवी, मनसा देवी तथा सती घाट आदि कई दर्शनीय धार्मिक स्थल हैं। देश-विदेश से प्रतिवर्ष करोड़ों लोग हरिद्वार दर्शन के लिए आते हैं। उन्होंने कहा कि हरिद्वार योगीराज श्री हंस जी महाराज की कर्मस्थली है और श्री भोले जी महाराज की जन्मस्थली है। हरिद्वार से ही श्री हंस जी महाराज ने देश-विदेश में अध्यात्म ज्ञान के प्रचार का शुभारंभ किया था। श्री हंस जी महाराज चाहते थे कि हरिद्वार के साथ-साथ पूरे उत्तराखंड में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हो। आज द हंस फाउंडेशन श्री हंस जी महाराज के सपने को साकार करता हुआ दिखाई दे रहा है।

हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में जनकल्याण सत्संग समारोह के दौरान आयोजित पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए डॉ. माताश्री मंगला जी। साथ में इलैक्ट्रोनिक एवं प्रिंट मीडिया से जुड़े पत्रकार बंधु

माताश्री मंगला जी ने कहा कि फाउंडेशन उत्तराखंड के सभी स्कूलों का उच्चीकरण करा रहा है। हरिद्वार स्कूलों के प्रबंधकों से बातचीत की जायेगी। यदि यहां के प्रबंधक चाहेंगे तो यहां के स्कूलों के स्तर में भी सुधार किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि हरिद्वार बहादराबाद में द फाउंडेशन द्वारा आंखों के अस्पताल का संचालन किया जा रहा है, जहां प्रतिदिन सैकड़ों लोग आंखों का इलाज कराकर लाभ ले रहे हैं। इस अस्पताल का भी उच्चीकरण कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि सतपुली में संचालित द हंस फाउंडेशन जनरल हास्पिटल से प्रतिदिन सैकड़ों लोग स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। इन दोनों अस्पतालों के सौजन्य से दूर-दराज के क्षेत्रों में फ्री मेडिकल कैम्प लगाकर लोगों को नि:शुल्क चिकित्सकीय परामर्श दवाइयां प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया जाता है।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि द हंस फाउण्डेशन द्वारा स्वामी विवेकानंद हेल्थ मिशन सोसाइटी द्वारा बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी, यमुनोत्री, अल्मोड़ा और धर्मावाला, हरिद्वार एवं देहरादून में संचालित अस्पतालों को आर्थिक सहयोग किया जाता है। मथुरा-वृन्दावन में बनाये जा रहे अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस अस्पताल के निर्माण में में द हंस फाउंडेशन 108 करोड़ रुपए का योगदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि हिमाचल के कुल्लू जिला में द हंस फाउण्डेशन द्वारा आधुनिक सुविधाओं से युक्त अस्पताल का निर्माण कराया जा रहा है। इसके साथ ही लेह-लद्दाख के दुर्गम क्षेत्रों में स्कूली बच्चों को नि:शुल्क ड्रेस, किताबें तथा स्कूली बैग आदि सामग्री बांटी।

डॉ. माताश्री मंगला जी ने बताया कि द हंस फाउंडेशन द्वारा आसाम के उत्तरी लखीमपुर जिला में 1001 गरीब कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया। उन्होंने कि द हंस फाउंडेशन द्वारा पार्लियामेंट के स्पीकर श्री ओम बिरला जी के लोकसभा क्षेत्र कोटा,राजस्थान में **'सुपोषित मां अभियान योजना'** के तहत गर्भवती महिलाओं के लिए 9 महीने तक निशुल्क पौष्टिक आहार एवं दवाइयां प्रदान की जा रही हैं।

कार्यक्रम में हरिद्वार प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री श्रवण झा तथा महासचिव श्री अश्विनी अरोड़ा के साथ अन्य पदाधिकारियों ने फूलों का गुलदस्ता और अभिनंदन पत्र देकर श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी का स्वागत किया। ■

श्री हंस जयंती के सुअवसर पर हरिद्वार में श्री हंसलोक सेवकों का सेवा शिविर संपन्न

हरिद्वार। श्री हंसलोक सेवक संगठन के सेवक और सेविकाएं सदैव सेवा के लिए उत्सुक रहते हैं। सेवा का भाव, संस्कार और स्वभाव उनमें रच-बस गया है। इसीलिए जब भी सेवा का अवसर उपस्थित होता है, वे भरपूर उत्साह के साथ सौंपी गयी सेवा में संलग्न हो जाते हैं। सेवक-सेविकाओं का यह ऐसा निष्काम संगठन है जो सेवा के लिए एक-दूसरे को प्रेरित, प्रशिक्षित और उत्साहित करते रहते हैं। श्री हंस जयंती के सुअवसर पर 12 व 13 नवंबर, 2022 को ऋषिकुल कॉलेज मैदान, हरिद्वार उत्तराखण्ड में आयोजित जनकल्याण सत्संग समारोह भी ऐसा ही सेवा का सुअवसर था जिसे सभी सेवक-सेविकाओं ने अपना सौभाग्य माना। देशभर से सेवक-सेविकाएं 11 नवंबर को ही हरिद्वार पहुँचकर अपनी-अपनी सेवा में संलग्न हो गए। ऋषिकुल कॉलेज के विशाल प्रांगण में फैले सत्संग पंडाल, भोजन प्रसाद वितरण, भोजनालय, भंडारा निर्माण, प्रवेश पत्र कार्यालय, श्री हंसलोक सेवक कार्यालय, सूचना एवं खोया-पाया केन्द्र, आवास, शौच-स्नान आदि स्थानों पर सेवक-सेविकाएं समूह बना-बनाकर सेवा में संलग्न रहे।

ऋषिकुल कॉलेज मैदान में 10 नवंबर से ही श्री हंसलोक सेवक कार्यालय स्थापित किया गया था जिसका संचालन संगठन के निदेशक श्री राकेश सिंह के नेतृत्व में श्री जी.एस. कुशवाहा, अरुण यादव और मुन्नालाल कुशवाहा ने अपने सहयोगियों के साथ किया। सत्संग समारोह को सफल बनाने के लिए जहाँ जिस सेवक-सेविका की आवश्यकता थी, उसके अनुसार उन्हें सेवा सौंपी गयी। डॉ. महेशचंद्र जोशी एवं श्री जगदीश भाई के नेतृत्व में सूचना एवं खोया-पाया केन्द्र का संचालन किया गया। यह केन्द्र दिनभर ध्वनि विस्तार यंत्र के माध्यम से आगंतुकों का मार्गदर्शन, सावधान और शांति व अनुशासन बनाये रखने के लिए प्रेरित करता रहा। श्री जी.एस. कुशवाहा, रामबाबू प्रजापति, विक्रम तिवारी, संदीपभाई पटेल, विजयपालसिंह रावत, लोकेश दवंडे, कल्पना सक्सेना, पूनम तिवारी, रुक्मिणी पाण्डेय, सोनी पंवार के मार्गदर्शन में सत्संग पंडाल,

दर्शन एवं प्रसाद वितरण व्यवस्था का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। दोनों दिन सत्संग पंडाल में प्रेमी भक्तों, श्रद्धालुओं एवं विशेष आगंतुकों को यथास्थान बैठाने, अनुशासन, शांति और सुरक्षा बनाये रखने में उत्तरकाशी, बैतूल, मुरैना, आगरा, दिल्ली और हिमाचल के सेवक-सेविकाओं का सराहनीय योगदान रहा। इन्हीं सेवक-सेविकाओं ने परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, परमाराध्या माताश्री मंगला जी तथा श्री सांख्य जी महाराज के दर्शन-पर्सन में सभी को शांति और अनुशासन के साथ दर्शन कराने तथा प्रसाद वितरण में सहयोग किया। सत्संग पंडाल एवं दर्शन के समय श्री सुरेश वर्मा के मार्गदर्शन में बाल सेवक-सेविकाओं ने विशेष सहयोग किया। प्रसाद वितरण का सेवा कार्य भी बाल सेवक-सेविकाओं ने बड़े ही सुन्दर ढंग से संपन्न किया। इसी के साथ बाल सेवक-सेविकाओं ने प्रवेश पत्र वितरण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये बाल सेवक-सेविकाएं संस्था के भविष्य हैं। सेवा करते समय इनका उत्साह देखते ही बनता है।

श्री सुरेश वर्मा के नेतृत्व में आगंतुकों को स्थान-स्थान पर ठहराने के लिए दिन-रात एक कर दिया। किसी को कोई असुविधा न हो इस बात का विशेष ध्यान रखा गया। श्रीमती सपना सिंह, रमा बिष्ट, सुशीला बिष्ट, परनीत कौर, मुकेश प्रसाद, जगदीश बिष्ट आदि का आवास सेवा में विशेष सहयोग रहा। श्री अरुण यादव, अनुभव टंडन, दीपक वर्मा, पूनम पंवार, प्रमोद यादव, हरिओम यादव के नेतृत्व में भोजन-प्रसाद वितरण में फिरोजाबाद, आगरा, मुरैना, बैतूल, नैनीताल, धौलपुर, भरतपुर आदि क्षेत्रों के सेवक-सेविकाओं तथा प्रेमी भक्तों का महत्वपूर्ण सेवा सहयोग रहा। सुबह नाश्ता, दोपहर को भोजन प्रसाद और फिर रात्रि को भोजन प्रसाद वितरण का सेवा कार्य कई-कई घंटे चलता रहा। श्री जगदीश गुप्ता, जगमोहन जी, मदनमोहन, वीरेन्द्र शर्मा तथा परमिन्दर के नेतृत्व में भोजन प्रसाद निर्माण का सेवा कार्य दिन-रात चलता रहा। सभी आगंतुकों के लिए स्वादिष्ट प्रसाद का निर्माण किया गया जिसे सभी ने बड़ी ही श्रद्धा और प्रेम के साथ ग्रहण कर आनन्द मनाया। श्री वामदेव, रमेश सनवाल एवं चंदन साहू के नेतृत्व में सुबह-शाम चाय की व्यवस्था की गयी। सभी ने गर्मागर्म चाय का आनंद लिया।

श्री रामेन्द्र सिंह, जयबिहारी, नारायण प्रसाद उइके, कौशल सिंह के

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सानिध्य में हरिद्वार के ऋषिकुल कालेज मैदान में आयोजित जनकल्याण सत्संग समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से आये श्रद्धालु–भक्तों के प्रवेश पत्र बनाते हुए श्री हंसलोक सेवक संगठन के सेवक एवं सेविकाएं

नेतृत्व में सुरक्षा व्यवस्था को संभाला गया। जगह-जगह तैनात सेवकों से लगातार संपर्क बनाये रखते हुए लगातार घूम-घूमकर सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण करने में सभी की महत्वपूर्ण सेवाएं रहीं। सासाराम, मुरैना, मंडला, मउ, गाजीपुर, फर्रुखाबाद, कन्नौज, उत्तरकाशी आदि के सेवक-सेविकाओं ने जगह-जगह तैनात रहकर सुरक्षा व्यवस्था में अपना सहयोग किया। श्री नानूभाई के नेतृत्व में सभी आगंतुकों को प्रवेश पत्र वितरित किए गए। इस कार्य में श्री उमाकांत चैधरी, अर्जुन कुमार के साथ कुमारी मनीषा दुबे के नेतृत्व में बाल सेवक-सेविकाओं का विशेष योगदान रहा। श्री प्रदीप पलाई के नेतृत्व में वाहन एवं यातायात व्यवस्था का संचालन सफलतापूर्वक किया गया।

श्री हंसलोक सेवक-सेविकाओं के साथ-साथ सभी आश्रम सेवकों और गार्डों ने दिन-रात लगातार सेवाएं देकर सत्संग समारोह को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुश्री ऋतु राणा, राकेश सिंह, मानस स्वाईं, सुरेश वर्मा, बी.के. त्यागी, प्रदीप पलाई, मोहित कुमार, विपिन मंडल, देवशरण पाल, संतोष सिंह बिष्ट, ललित अधिकारी, सत्येन्द्र पंडित, संजय कुमार, परमिन्दर आदि ने अपने सहयोगियों के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में 1 नवंबर से 15 नवंबर तक लगातार अपनी सेवाएं समर्पित कीं। सभी ने अपरिमित पुरुषार्थ किया। इस प्रकार जनकल्याण सत्संग समारोह अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए बड़े ही प्रभावशाली ढंग से संपन्न हुआ। परमपूज्य श्री सद्गुरुदेव जी महाराज एवं परमाराध्या माता जी के आशीर्वाद से इस प्रकार के कार्यक्रम लगातार आयोजित होते रहें तथा सभी को सेवा का सुअवसर प्राप्त होता रहे, ऐसी हार्दिक प्रार्थना है। ■

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

आप सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों को विदित ही है कि हंसलोक संदेश पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से जारी है। अत: आप सबसे निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **''हंसलोक संदेश''** मासिक पत्रिका के अधिक से अधिक पाठक बनायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित सत्संग समारोह में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही सत्संग समारोह के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से सबंधित गतिविधियों के साथ संस्था द्वारा चलाये जा रहे अथवा प्रस्तावित विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए। आप अपने क्षेत्र के स्कूल, कालेजों, लाइब्रेरी, संस्था-संगठनों एवं सरकारी-अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में भी पत्रिका दे सकते हैं। प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकायें रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी के नाम व पते पर सभी पत्रिकाएं बंडल में मंगवायें।

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

संपर्क सूत्र-8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे।

-सम्पादक

हरिद्वार, उत्तराखण्ड, नवंबर, 2022

योगीराज परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की पावन जयंती के शुभ उपलक्ष में दिनांक 12 व 13 नवंबर, 2022 को ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार, उत्तराखण्ड में दो दिवसीय विशाल जनकल्याण सत्संग समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश से हजारों साधु-संतों, प्रेमीभक्तों एवं श्रद्धालुगन ने बड़ी ही श्रद्धा-भक्ति के साथ शामिल होकर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी के दर्शन व प्रवचन से लाभ प्राप्त किया।

भक्ति मार्ग में अहंकार मनुष्य के पतन का कारण !

इतिहास साक्षी है कि जब -जब भी मनुष्य के जीवन में अहंकार आया, तब-तब उसका पतन हुआ। भगवान श्री राम जब लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद अयोध्या वापस आए तो माता कौशल्या ने उनसे पूछा कि बेटा राम, तुमने रावण को कैसे मारा? तब श्री राम जी बड़ी ही विनम्रता के साथ माता कौशल्या से कहते हैं कि मैंने रावण को नहीं मारा, बल्कि रावण को तो उसकी 'मैं' ने मारा, उसके अहंकार ने मारा। रावण जो अपने समय का बहुत प्रकांड विद्वान और लंका का शक्तिशाली राजा था, अहंकार के कारण उसका भी सर्वनाश हुआ। इसलिए जीवन में कभी भी अहंकार को नहीं आने देना चाहिए । **- माता श्री मंगला जी**

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध है। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा अन्य संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।